ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-2* March-2017
Innovation The Research Concept

भारत–नेपाल का ऐतिहासिक परिचय

सारांश

भारत और नेपाल का सम्बन्ध सदा से ही मधुर रहे हैं और भारत–नेपाल की संस्कृति रहन सहन एक जैसे ही हैं लेकिन देखा जाये तो कुछ वर्षों से भारत नेपाल के बीच कई बार मतभेद पैदा हुए और सामान्य हुए लेकिन भारत ने सदा ही नेपाल के साथ सहयोग का भाव रखा नेपाल राजनीति में कई बार बदलाव हुए और कुछ राजनैतिक पार्टी ने भारत के खिलाफ जहर उगला लेकिन भारत ने उनपर गौर न करते हुए नेपाल के लोगों व अन्य परियोजनाओं के द्वारा सदा सहयोग किया और वर्तमान में भारत द्वारा नेपाल में कई परियोजना संचालित हैं जिसके कारण भारत और नेपाल के बीच सम्बन्ध मधुर बने हुए है नेपाल में राजतन्त्र के बाद लोकतन्त्र का निर्माण किया जा रहा है। जिसमें भारत नेपाल के सहयोग के लिए वचनवद्ध है।

मुख्य शब्द : संस्कृति, राजनीति, परियोजना, राजतन्त्र, लोकतन्त्र।

अशोक कुमार
सह प्राध्यापक,
सैन्य विज्ञान विभाग,
कृष्णा कॉलेज ऑफ साइन्स एण्ड रूरल टेक्नोलॉजी,
आगरा,उ0प्र0

विष्णु कान्त शर्मा
प्राध्यापक,
सैन्य विज्ञान विभाग,
महारानी लक्ष्मी बाई उत्तकृष्ट महाविद्यालय,ग्वालियर,
म0प्र0

प्रस्तावना

अगर हम नेपाल में प्रजातंत्र के इतिहास की बात करें तो 1940 के दशक में ही लोकतांत्रिक गतिविधियों की शुरूआत हो चुकी थी। लोकतन्त्र के समर्थक राणा शासन के खिलाफ आन्दोलन शुरू कर चुके थे। उसी समय 1950 में चीन ने तिब्बत पर कब्जा कर लिया था लेकिन भारत ने नेपाल में चीन का हस्तक्षेप को देखते हुए भारत ने नेपाल का समर्थन किया और राजा त्रिभुवन को सैनिक सहायता प्रदान की और एक नई सरकार का निर्माण हुआ। 1959 में राजा महेन्द्रू ने निर्दलीय पंचायत की व्यवस्था को लागू किया और राज्य किया। इसके बाद सन् 1989 में नेपाल में एक बदलाव हुआ। इसी समय नेपाल में राजतन्त्र को संवैधानिक रूप देने के लिए बहुदलीय संसद बनाने का वातावरण तैयार हुआ और अधिक प्रयास के बाद सन् 1990 में कृष्ण प्रसाद भट्टराई के अन्तरिम सरकार के प्रधानमंत्री बने और एक नए संविधान का निर्माण हुआ।

दोनों देश के प्रधानमंत्रियों ने अपने स्तर पर 1950 से चले आ रहे शान्ति समझौते पर वार्ता की तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग का आश्वासन भी दिया गया तथा दोनों देशों के बीच आर्थिक व सामाजिक रूप से सहयोग की समीक्षा की गई। नेपाली प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा कि वे नेपाल में शान्ति प्रक्रिया पर जोर देना चाहते हैं तथा नेपाल में नया संविधान तैयार करना चाहते हैं जिससे कि नेपाल में लोकतन्त्र की पूर्ण स्थापना हो सके।

दोनों देशों की प्राथमिकता रही है कि भारत–नेपाल व्यापार व निवेश पर जोर दिया जाये तथा उन समस्याओं को दूर किया जाये जिनसे कि व्यापार व निवेश में कानूनन कुछ समस्याएं आती हैं उन्हें अपने स्तर पर सुधार किया जाये ताकि दोनों देश को आपसी सहयोग मिले। भारत ने नेपाल के प्रधानमंत्री को आश्वासन दिया कि वे नेपाल को समय समय पर आर्थिक मदद देते रहेंगे। नेपाल में व्यापार की सुविधा के लिए भारत से नेपाल जाने के लिए और नेपाल से भारत आने के लिए यातायात पर विशाखापट्टनम बंदरगाह को व्यापारिक उपयोग के लिए नेपाली प्रधानमंत्री ने भारतीय प्रधानमंत्री से अपनी इच्छा प्रकट की। नेपाल में वित्तीय बाजारों में विकास हेतु भारत सरकार सॉफ्टवेयर एप्लीकेशंस के विकास परामर्शी सेवाओं और प्रशिक्षण के लिए 9.2 करोड़ रूपये की लागत से नेपाल में सेन्ट्रल डिपाजिटरी सिस्टम (सीडीएस) स्थापित किये जाने के लिए भी अपनी सहमति व्यक्त की है।

भारत ने नेपाल को सहयोग करते हुए नेपाल में स्थित वी0पी0 कोइराला स्वास्थ्य विकास संस्थान के विकास के लिए भारत द्वारा 2 वर्ष तक 5 करोड़ रूपये भारत उपलब्ध करायेगा। नेपाल में आयोडीन की कमी से होने वाली बीमारी गलगण्ड को नियन्त्रण करने के लिए भारत ने नेपाल को अनुदान दिया है तथा इस बीमारी की रोकथाम के लिए सहयोग दिये जाने की घोषणा भारत ने की है। यह तो दोनों देश जानते हैं कि भारत नेपाल की सीमा खुली सीमा है।

यहाँ पर दोनों देश के नागरिकों को आने जाने की छूट है। इस पर नेपाल के प्रधानमंत्री ने आश्वासन दिया है कि नेपाल भारत के खिलाफ किसी भी गतिविधि हेतु अपनी भूमि का इस्तेमाल नहीं होने देगा। भारत व नेपाल के प्रधानमंत्रियों के बीच सीमा पट्टी के नक्शों को तैयार करने और भारत नेपाल संयुक्त तकनीकी समिति (जेटीसी) द्वारा अन्तिम रूप देने में हुई सहमति पर सन्तोष व्यक्त किया गया। भारत शीघ्र ही 200 करोड़ रुपये की लागत से बीरगंज–रक्सौल और जोगबानी–विराटनगर में दो एकीकृत सीमा चौकियाँ स्थापित करेगा।

भारत ने हमेशा ही नेपाल के साथ सहयोग की भावना के साथ ही कार्य किया है। भारत सरकार नेपाल की जनता को आर्थिक विकास स्वास्थ्य सेवाऐं, संसाधन विकास, शिक्षा व सांस्कृतिक गतिविधियों व महत्वपूर्ण क्षेत्र शामिल हैं। बागमती व उनकी सहायक नदियों की सुरक्षा व सफाई रखने के लिए एक परियोजना भारतीय प्रधानमंत्री ने एक दल ''बागमती सभ्यता परियोजना'' के लिए अध्ययन दल को भेजने की सहमति प्रदान की है। दोनों देश के प्रधानमंत्रियों ने सप्त कोसी उच्च बांध और सनकोसी डायवर्जन परियोजना तथा नौमुरे परियोजना कार्य तेजी लाने की अपनी सहमति प्रदान की है। दोनों देशों ने तराई (हुलकी सड़कें) में फीडर और मुख्य सड़कों को बनाने के लिए अपनी सहमति व्यक्त की है। भारत नेपाल तराई क्षेत्र में 660 किलोमीटर लम्बी 20 सड़कों का निर्माण करने हेतु 805 करोड़ की लागत से एक परियोजना पर कार्य करने जा रहे हैं। भारत व नेपाल के बीच एक परियोजना के द्वारा 680 करोड़ की लागत से रेलमार्ग बनाया जा रहा है। भारत द्वारा मार्ग जोगबनी–विराटनगर के बीच 18 किमी0 व वीजलपुर से जयनगर के बीच 51 किमी0 का निर्माण किया जाना है। इस पर दोनों देश के बीच सहमति व्यक्त की गई है।

अध्ययन का उद्देश्य

सन् 1985–87 में दोनों देशों के बीच मन मुटाव पैदा हो गया इसका कारण था नेपाल द्वारा श्रीलंका में जाफना में की जा रही भारतीय कार्यवाही की आलोचना तथा मेघालय से नेपालियों का स्थानांतरण की प्रक्रिया थी। लेकिन दोनों देशों की आर्थिक संबंधों को मजबूत करने के लिए एक सन् 1987 में संयुक्त आयोग गठित किया गया। जिसका कार्य व्यापारिक व संसाधनों का प्रबन्ध व परामर्श देना आयोग का मुख्य कार्य भी था। सन् 1990 में नेपाल के प्रधानमंत्री कृष्ण भट्टराई भारत की यात्रा पर आये और दोनों देशों के संबंधों में सुधार के लिए वार्ता की। एक संयुक्त वक्तव्य में दोनों देशों के सुधार व निम्नलिखित तथ्यों पर सहमति व्यक्त की गयी।

1. पारस्परिक सुरक्षा की संकल्पना के प्रति सम्मान।
2. पारस्परिक सीमा क्षेत्रों में पूर्वाग्रह रहित विभिन्न गतिविधियों को अनुमति।
3. प्रतिरक्षा संबंधी विषयों पर समझौते के पूर्व की अनिवार्यता।
4. सुदृढ़ द्विपक्षीय सम्न्धों के लिए व्यापक व्यवस्था

चुनौतियाँ

1. जलवायु परिवर्तन एक ऐसा मुद्दा है जो कि भारत–नेपाल के बीच प्राकृतिक संसाधनों के लिए चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। हिमालय के ऊपर गलेशियर का पिघलना, चूर–भावर श्रृंखला के परिस्थितिक्रिय ह्रास, प्राकृतिक आपदा के रूप में बाढ़ महत्वपूर्ण चुनौती है जिससे दोनों देशों को मिल जुलकर निपटाना होगा।
2. सीमा पर नेपाल देश व भारत देश की सेना को सक्षम व प्रशिक्षण देना है। भारत नेपाल को 320 करोड़ रूपये की सहायता देना चाहता है जो नेपाल पुलिस बल प्रशिक्षण व अन्य सैनिक समस्याओं को व भवनों के निर्माण में सहयोग करेगा।

1950 की भारत–नेपाल शान्ति एवं मैत्री सन्धि

भारत और नेपाल एक दूसरे पर भरोसा व सहयोग की भावना से 1950 में एक सन्धि की गई थी जो कि नेपाल के तत्कालीन प्रधानमंत्री मोहन शमसेर जंग बहादुर राणा और भारत के तत्कालीन राजदूत चन्द्रशेखर नारायण सिंह के बीच हस्ताक्षरित की गई थी। इस सन्धि के प्रावधान निम्न प्रकार हैं :–

1. दोनों देश के बीच मुक्त एवं आबंधित यात्रा आवागमन सुविधा।
2. दोनों देश के बीच मुक्त व्यापार सुविधाऐं।
3. एक दूसरे देश में दोनों के नागरिकों के बीच किसी प्रकार का भेदभाव न करना।
4. रक्षा मामलों में दोनों देशों के बीच सहयोग।
5. विदेश मामलों में दोनों देशों में सहयोग।
6. दोनों देश एक दूसरे के प्रति परस्पर आदर, क्षेत्रीय एकता और स्वतंत्रतों प्रति सम्मान करेंगे।
7. सामाजिक मामलों पर सहयोग में वृद्धि करने एवं दोनों देश प्रादेशिक सुरक्षा के मामलों में एक दूसरे से विचार विमर्श करके ही कदम उठायेंगे।
8. दोनों देश एक दूसरे के प्रति उत्पन्न सुरक्षा चुनौतियों को सहन करने के बजाय उनसे निपटेंगे।

दोनों देश के बीच इस सन्धि से किसी एक देश को फायदा नहीं है, यह सन्धि दोनों देश के बीच एक गठबन्धन है जिससे कि दोनों देश आपस में सहयोग कर सकें। लेकिन कई वर्ग ऐसे हैं जो इस सन्धि के खिलाफ हैं क्योंकि वो समझते हैं कि इस सन्धि से नेपाल देश की संप्रभुता प्रभावित होती है। लेकिन भारत के लिए यह सन्धि चीन के प्रभाव को देखते हुए अति आवश्यक है। इसी बात को लेकर कई देश नेपाल को भावनात्मक रूप से उकसाते हैं कहते हैं कि इस सन्धि से भारत को लाभ अधिक है वह नेपाल पर आर्थिक व सहयोग से अपना प्रभाव छोड़ना चाहता है।

ऐतिहासिक सम्बन्ध

सन् 2006 में एक ऐतिहासिक परिवर्तन हुआ। इस राजनैतिक परिवर्तन को इतिहास सदा याद रखेगा क्योंकि अप्रैल 2006 में 239 साल पुराने राजतंत्र को समाप्त करके लोकतंत्र की बहाली की गई। जनवरी 2007 में नेपाल में माओवादी व नेपाल सरकार के बीच एक समझौता हुआ। इस समझौते से नेपाल में चल रहा गृह युद्ध समाप्त हुआ।

भारत व नेपाल के बीच सदा से ही सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण रहे हैं। इसका मुख्य कारण भू राजनीतिक अवस्थिति को माना जाता है। समुद्री भागों के लिए नेपाल

की निर्भरता भारत पर उसे आर्थिक राजनीतिक सहयोग के लिए सन् 1950 की शान्ति एवं मैत्री सन्धि हमेशा ही महत्वपूर्ण सहयोग रहे हैं। लेकिन भारत ने कभी भी इस सन्धि का गलत उपयोग कभी नहीं किया है। भारत ने सदा ही इस सन्धि से सांस्कृतिक व सहयोग की भावना से ही उपयोग किया है।

भारत अपने ऊपर नेपाल की आर्थिक निर्भरता और सांस्कृतिक समानता को सम्मान देते हुए दोनों देश के बीच लगभग 1751 किलोमीटर लम्बी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा को खुली रखे हुए है। जहाँ एक ओर नेपाल को आर्थिक आवश्यकता पूरी करने की छूट मिल रही है। वहीं भारत नेपाल स्थित जल संसाधनों के इस्तेमाल करने का इच्छुक है जिसका फायदा दोनों देश उठा रहे हैं। भारत–नेपाल सम्बन्धों को आगे बढ़ाने के क्रम में नेपाल के तत्कालीन प्रधानमंत्री गिरिजा प्रसाद कोईराला ने भारत ने 2006 जून में यात्रा की थी। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच घनिष्ठ संबंधों हेतु विचार विमर्श किया गया। इन्हीं सम्बन्धों को आगे बढ़ाने के लिए माओवादी प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल उर्फ प्रचड़ ने सितम्बर 2008 में अपनी भारत यात्रा सम्पन्न की थी।

राजनैतिक गतिविधियों के बाद दोनों देशों के सम्बन्धों में सुधार देखने को मिला। शीघ्र ही भारतीय प्रधानमंत्री श्री वी.पी. सिंह नेपाल की यात्रा पर गये और दोनों देशों के व्यापारिक विस्तार को और अधिक उदार बनाते हुए नेपाली उत्पादकों को करमुक्त कर दिया और उन्हें भारतीय प्रधानमंत्री एवं नेपाली सरकार के बीच एक निश्चित समय सीमा के अन्तर्गत करनाली, सप्तकोसी, बूढ़ी गडक कमला और बागमती नदियों पर परियोजनाएं तैयार करने के लिए सहमति की। तत्पश्चात् भारत से सम्भावित वैकल्पिक साख की राशि 35 करोड़ रूपये से बढ़ाकर 50 करोड़ रूपये कर दी।[1]

भारत और नेपाल के बीच उच्च स्तरीय यात्राओं के आदान–प्रदान की नियमित परम्परा को बनाये रखते हुए नेपाल के प्रथम राष्ट्रपति डा0 रामवरन यादव अपनी सरकारी यात्रा पर 27 जनवरी से 5 फरवरी 2011 तक भारत यात्रा पर आये। हाल ही के वर्षो में नेपाल से की गई भारत यात्राओं में प्रधानमंत्री माधव कुमार 18 से 22 अगस्त 2009 और प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल प्रचण्ड 14 से 18 सितम्बर 2008, विदेश मंत्री सुश्री सुजाता कोइराला 10 से 14 अगस्त 2009 को भारत की यात्रा पर आयी थीं।[2]

भारत के पक्ष से हमारे विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा नेपाल की यात्रा पर 15 से 17 जनवरी 2010 की अवधि में गये थे। विदेश सचिव नेपाल की यात्रा पर 18 से 20 जनवरी 2011 की अवधि में गये थे। 1950 की भारत नेपाल मैत्री सन्धि दोनों देशों की आधारशिला है। संधि के अनुसार नेपाल के नागरिक भारत में भारतीय नागरिकों के बराबर सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। नेपाल देश चारों ओर से घिरा होने के कारण उसे हानि होती है लेकिन भारत की संधि से उसे इस समस्या से निजात मिल गई है। भारत ने नेपाल की हर समय मदद करता रहता है। सन् 2005 में सात दल व माओवादी के बीच नई दिल्ली में एक सहमति हुई थी। 2006 में भारत सकार ने ऐतिहासिक शान्ति समझौते पर व नई योजनाओं पर सहमति बनी थी। जिसमें नेपाल की राजनैतिक स्थिरता को शान्तिपूर्ण समझौते व लोकतान्त्रिक प्रक्रिया को सम्मिलित करते हुए समाधान का प्रावधान है। भारत सरकार ने नेपाल की सरकार व वहाँ के लोगों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर उनकी जरूरतों को पूर्ण करने की कोशिश की है। नेपाल सरकार के विकास के कार्यो में स्वास्थ्य शिक्षा, ग्रामीण क्षेत्रों व अन्य परियोजनाओं को अपने हाथ में लेकर नेपाल की सहायता व योगदान प्रदान करता है। सन् 2009–10 में नेपाल को सहातया राशि 150 करोड़ से अधिक दी तथा भारतीय दूतावास द्वारा समय समय पर लघु विकास परियोजना स्कीम के अन्तर्गत प्रदान की जाती हैं।

निष्कर्ष

भारत–नेपाल के सम्बन्धों को और अधिक मजबूती की आवश्यकता है क्योंकि कुछ पार्टियाँ चीन के सहयोग की ओर हाथ बढ़ाती है जो कि भारत के लिए चिन्ता का विषय है।इसलिए भारत नेपाल को समय–समय पर आर्थिक मदद देता रहता है। चाहें वह किसी भी क्षेत्र में हों विज्ञान के क्षेत्र, शिक्षा के क्षेत्र एवं चिकित्सा के क्षेत्र में। चाहे वह सीमा विवाद हो भारत हमेाा नेपाल का सहयोग करता रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सी.वी.पी. श्रीवास्तव, भारत और विश्व बदलते परिदृश्य, 2002, पृ0 281.*
2. *भारतीय दूतावास द्वारा लेख, 2011, भारत नेपाल सम्बन्ध।*